त्रिकुटा

द्वितीय अंक सितम्बर 2025

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि॰
(भारत सरकार का उपक्रम)

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू

हडको

hudco

A NAVRATNA CPSE

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू की ई-गृह पत्रिका “त्रिकुटा”

संरक्षक एंव मुख्य संपादक

डॉ. दीपक बंसल

क्षेत्रीय प्रमुख

संपादक

श्री ज्ञान स्वरूप ठाकुर
प्रबंधक (वित)/
हिंदी नोडल अधिकारी

सह संपादक एंव परिकल्पना

श्रीमती दपिंदर कौर
प्रबंधक (वित्त)/
हिंदी नोडल सहायक

विशेष आभार :

श्री सोना पिंगूआ, वरिष्ठ प्रबंधक (परियोजना)
श्री शाम लाल, प्रबंधक (एच आर / प्रशासन)
श्री अश्वनी कुमार, प्रबंधक (आई टी)
श्रीमती पूर्णिमा भट्ट, प्रबंधक (प्रशासन)

मुख्य पृष्ट फोटो गूगल के इस लिंक (https://www.incredibleindia.gov.in/en/jammu-and-kashmir/jammu/bahu-fort) से लिया गया है और बैक कवर फोटो : डॉ. पंकज चंदन

* इस पत्रिका मे दिये गए लेख , विचार, कविता और व्यवरण की जिम्मेदारी संबंधित लेखकों/ कवियों की है और हडको की इस वारे मे कोई जिम्मेदारी नहीं होगी ।

प्रिंटर: अतर प्रिंटर, जम्मू

अनुक्रमणिका (INDEX)

क्रम संख्या		शीर्षक		पृष्ठ संख्या
1	संदेश	संजय कुलश्रेष्ठ, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक		3
2		एम नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)		4
3		दलजीत सिंह खतरी, निदेशक (वित्त)		5
4		डॉ दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख		6
5	कहानी, आलेख, कविताएं व अन्य गतिविधियाँ	हडको की लेह लद्दाख में 668वीं बोर्ड मीटिंग		7
6		हडको के 55वां स्थापना दिवस का आयोजन		8
7		कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) के तहत एम्स, जम्मू में नेत्र बैंक के लिए एमओयू समझौता		10
8		हडको भवन, जम्मू में अतिरिक्त फ्लोर के निर्माण के लिए सीपीडब्लूडी के साथ एमओयू समझौता		11
9		कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) के तहत एम्स, जम्मू को ई वाहन के लिए सहायता		12
10		कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) के तहत दिव्यांगजनों के लिए कश्मीर में वितरण शिविर		13
11		बीआईएस (BIS) पर एनबीसी की बैठक		15
12		चिनाब वैली पावर प्रोजेक्ट लिमिटेड द्वारा पकल दुल में 1000 मेगावाट की पनबिजली परियोजना के लिए ऋण समझौता		16
13		वार्षिक खेल दिवस का आयोजन		17
14		अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन		19
15		विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन		21
16		आपदा प्रबंधन और जम्मू कश्मीर	डा० दीपक बंसल	22
17		स्वतंत्रता दिवस का आयोजन		31
18		वकालत का अर्थ	अश्वनी कुमार	33
19		मेरी 28वीं अमरनाथ यात्रा	प्रवीन कुमार	34
20		सुल्तान ज़ैन उल आबिदीन : कश्मीर के बड शाह	उन्मेष कान्त शाह	36
21		विकसित भारत का सपना	सुखदेव कुमार	38
22		हमारी प्रकृति	गुनीत कौर	39
23		आज के युवा और सोशल मीडिया का असर	अनंता शाह	40
24		घर से भगवान तक	दीपक कुमार नौटियाल	41
25		हिन्दी की विशेष कार्यशाला का आयोजन		43
26		हाउस वाइफ	मंजीत भारती	44
27		जीने की राह	शाम लाल	46
28		सुकून के दो पल	ज्ञान स्वरूप ठाकुर	47
29		भारत में बैंकिंग का बदलता स्वरूप	महेश कुमार	48
30		लद्दाख के वन्य जीवन के कुछ चित्र	डॉ पंकज चंदन	51

संदेश

प्रिय साथियों,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू द्वारा अपनी गृह पत्रिका "त्रिकुटा" के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । गृह पत्रिकाएं समकालीन एवं नवीन विचारणीय विषयों की प्रस्तुति मात्र ही नहीं होती, वरन् भावी प्रगति की पूर्वपीठिका का कार्य भी करती हैं । यह सुखद सूचना है कि "त्रिकुटा" के उत्कृष्ट प्रकाशन के लिए जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय गत वर्षों से भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के दिशा निर्देशों का अनुसरण करता रहा है ।

हडको सदैव देश की आवास एवं शहरी विकास संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति में अग्रणी भूमिका निभाता रहा है । इसी भावना के अनुरूप, "त्रिकुटा" जैसे प्रकाशन हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की आंतरिक प्रतिभाओं को उजागर करने का सशक्त माध्यम हैं । यह पत्रिका न केवल हमारी राजभाषा नीति के प्रति प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करती है, बल्कि संगठनात्मक एकता एवं सकारात्मक कार्यसंस्कृति को भी पुष्ट करती है ।

राजभाषा के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ-साथ जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय केंद्र शासित प्रदेश जम्मू एवं कश्मीर और लद्दाख के विकास में कई वर्षों से विभिन्न योजनाओं में वित्तपोषण के माध्यम से अहम भूमिका निभाते हुए अपना सम्पूर्ण योगदान दे रहा है । अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारियों (CSR) एवं विशेषकर जम्मू एवं कश्मीर में हाल ही में विद्युत उत्पादन से जुड़ी कई परियोजनाओं मे जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिए गए योगदान विशेष रूप से सराहनीय है ।

मैं जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कार्मिकों तथा पत्रिका के संपादक मंडल को इस नवीन एवं आकर्षक पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

यह हमारे लिए हर्ष एवं प्रसन्नता की बात है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू द्वारा अपनी गृह पत्रिका "त्रिकुटा" के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । हमारे संविधान में हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और हमें संविधान का सम्मान करते हुए अपने रोजमर्रा के काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना चाहिए । हिंदी गृह-पत्रिकाएं हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की नवीन अभिव्यक्तियों व उनके अनुभव को हिंदी उपयोग के लिए दूसरों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । हिन्दी गृह पत्रिकाएं हिंदी के प्रति हमारे जुड़ाव व अपनत्व को दर्शाती हैं तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में केंद्र सरकार एवं उनके अधीनस्थ कार्यालयों में किए जा रहे उनके प्रयासों में अहम भूमिका निभाती हैं ।

"त्रिकुटा" न केवल हिंदी भाषा की समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाने का प्रयास है, बल्कि यह हम सभी को लेखन, अभिव्यक्ति और चिंतन की नई दिशा भी प्रदान करती है। हमारे संगठन की सफलता केवल परियोजनाओं और उपलब्धियों से ही नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक एवं बौद्धिक सक्रियता से भी मापी जाती है। इस दृष्टि से यह पत्रिका एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है ।

मैं सभी रचनाकारों एवं संपादकीय टीम को साधुवाद देता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी ।

शुभकामनाओं सहित,

एम नागराज

निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

संदेश

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू द्वारा ई-पत्रिका 'त्रिकुटा' के द्वितीय अंक का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है और आशा है कि यह क्रम आगे भी जारी रखा जाएगा । गृह पत्रिकाएं सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने और उसे समृद्ध करने में अपनी विशेष भूमिका निभाती हैं । इस प्रकार के सृजनात्मक कार्य राजभाषा के प्रचार-प्रसार में हमारे अनुभव एवं विचारों को प्रस्तुत एवं साझा करने का एक आसान माध्यम है ।

मुझे विश्वास है कि यह अंक अपने उत्कृष्ट लेखों, कविताओं और आलेखों के माध्यम से पाठकों के मन को स्पर्श करेगा और हिंदी के प्रति हमारे लगाव को और प्रगाढ़ बनाएगा । मैं संपादकीय टीम एवं सभी योगदानकर्ताओं को हार्दिक बधाई देता हूँ और पत्रिका की निरंतर सफलता की कामना करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

दलजीत

दलजीत सिंह खतरी
निदेशक (वित्त)

सम्पादकीय

हडको के गृह पत्रिका के द्वितीय अंक “त्रिकुटा” को आपके हाथ में सौंपते हुए मुझे बहुत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह हमारे प्रथम अंक के प्रकाशन को जारी रखने का प्रयास है जो कि हिन्दी के हमारे रचनाकारों के साथ मिलकर आगे भी जारी रहेगी । राजभाषा हिंदी के प्रचार और प्रसार को सरकारी कामकाज मे बढ़ावा देना हमारा राष्ट्रीय एवं नैतिक कर्त्तव्य भी है। इस दिशा में हमारी “त्रिकुटा” पत्रिका राजभाषा के उत्थान और प्रसार में और भावनाओं की अभिव्यक्ति में अपना योगदान देती रहेगी । क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू के लिए यह बेहद खुशी का मौका है कि हम “त्रिकुटा” के प्रकाशन को आगे भी जारी रख सके और द्वितीय अंक का प्रकाशन हो रहा है । मुझे आशा है कि इस प्रयास को जारी रखने में सबका प्रेम, सहयोग और प्रोत्साहन सदैव मिलता रहेगा । मैं उन सभी लेखकों, रचनाकारों एवं उनके पारिवारिक सदस्यों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने रंग-बिरंगी पुष्प रूपी रचनाओं एवं लेखों का समर्पण कर इस पत्रिका को जारी रखने में अपना विशेष सहयोग दिया है । मुद्रित प्रति के प्रतियों की संख्या सीमित रखी गई है है परन्तु ई-पत्रिका के चलन में आ जाने से इसका प्रयोग क्षेत्र असीमित हो जाता है ।

इस संबंध में यहाँ विशेष उल्लेख करना उचित होगा कि हमारी त्रिकुटा पत्रिका मे शामिल रचनाएं इस कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों/ कर्मचारियों की अनुभवों एवं भावनाओं को प्रतिबिंबित करने का माध्यम है। हमारे कर्मचारी/अधिकारी विभिन्न योजनाओं और परियोजना के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सक्रिय भूमिका निभाते हुए राजभाषा हिन्दी के विकास में बहुमूल्य योगदान दे रहे हैं । मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय की विभिन्न गतिविधियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करेगी और रचनाकारों के राजभाषा संवर्धन हेतु किए जा रहे प्रयासों की झलक भी इसमें देखने को मिलेगी| यह त्रिकुटा पत्रिका भविष्य में भी इसी प्रकार प्रेम और प्रोत्साहन पाकर एवं जरूरी सुधारों के साथ निरंतर प्रकाशित व प्रसारित होती रहेगी । इस पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों, रचनाकारों, सहयोगियों तथा संपादक मंडल को मेरी बहुत बहुत हार्दिक शुभकामनायें ।

डॉ. दीपक बंसल

क्षेत्रीय प्रमुख जम्मू

हडको की 683 वीं बोर्ड मीटिंग का लेह लद्दाख मे आयोजन

हडको की 683 वीं बोर्ड मीटिंग का आयोजन लेह लद्दाख मे 18 जुलाई 2025 को किया गया । इस मीटिंग मे जम्मू, कश्मीर और लद्दाख क्षेत्र मे विकास की योजनाओं की भी समीक्षा की गई । हडको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री संजय कुलश्रेष्ठ, श्री एम. नागराज, निदेशक (कॉर्पोरेट प्लैनिंग) एवं डा० दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख, जम्मू ने इस क्रम मे लद्दाख के पमुख सचिव डॉ. पवन कोतवाल, आई ए एस से भी मुलाकात की ।

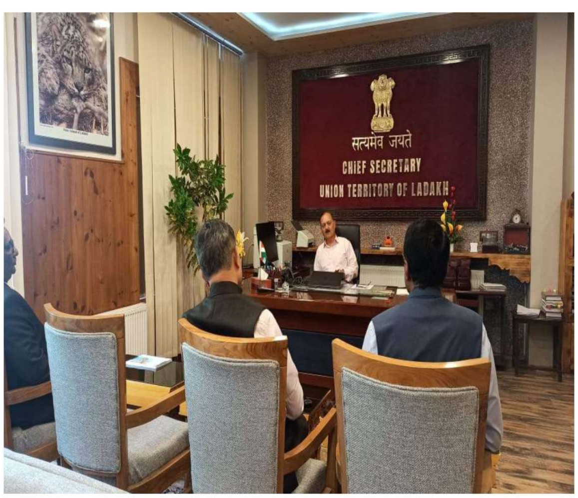

हडको के 55 वां स्थापना दिवस का आयोजन

हडको जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय ने 31 मई 2025 को होटल जोन बाय द पार्क, रेल हेड कॉम्प्लेक्स, जम्मू में हडको का 55वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। इस कार्यक्रम में हडको से जुड़े विभिन्न विभागों और संस्थानों के अन्य गणमान्य लोगों के अलावा विभिन्न एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। समारोह में जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय के सभी वर्तमान और पूर्व कर्मचारी अपने परिवारों के साथ बड़े उत्साह और उत्साह के साथ शामिल हुए।

क्षेत्रीय प्रमुख डॉ. दीपक बंसल ने सभी अतिथियों का गर्मजोशी से स्वागत किया और अन्य गणमान्य लोगों और वरिष्ठ अधिकारियों के साथ दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उसके बाद सरस्वती वंदना की गई और उसके बाद केक काटने की रस्म हुई। हडको की उपलब्धियों की झलकियों को उजागर करते हुए “हडको-2025 फाइनेंसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर बियॉन्ड हाउसिंग और हडको की यात्रा पर एक वीडियो चलाया गया। कार्यक्रम के बाद रात्रिभोज का आयोजन किया गया। इस रोमांचक शाम के बाद दर्शक ऊर्जावान, अत्यधिक खुशी और चेहरों पर मुस्कान के साथ हॉल से बाहर निकले।

Day Celebration
on
31.05.2025

*****

कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR)

हडको ने CSR पहल के तहत, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जम्मू में अत्याधुनिक नेत्र बैंक स्थापित करने के लिए रू. 124.90 लाख के अनुदान की स्वीकृति दी है जिसके लिए एमओयू समझौता हुआ। एम्स जम्मू के कार्यकारी निदेशक एवं सीईओ डा० शक्ति कुमार गुप्ता और हडको क्षेत्रीय प्रमुख डा० दीपक बंसल के बीच 12.09.2025 को एमओयू समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए ।

*****

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू ने सीपीडब्लूडी के साथ हडको भवन, जम्मू पर अतिरिक्त तीन फ्लोर बनाने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए

डॉ. दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख, जम्मू ने हडको भवन, ओ.बी-8, रेलहेड कॉम्प्लेक्स, जम्मू में रु.30.04 करोड़ की अनुमानित लागत से अतिरिक्त 03 मंजिलों के निर्माण के लिए केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, जम्मू के साथ दिनांक 14.08.2025 को समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (**CSR**)

हडको की CSR पहल के तहत, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जम्मू को 10 ई-वाहन (8 सीटर) की खरीद के लिए रू.54.80 लाख की सहायता दी गयी| दिनांक 03.09.2025 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जम्मू कैंपस में डॉ. दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख, जम्मू ने हरी झंडी दिखा कर औचारिकता समारोह संपन्न किया|

हडको के सीएसआर कार्यक्रम के तहत पहले से मूल्यांकित दिव्यांगजनों (पीडब्ल्यूडी) के लिए रामबन (जम्मू और कश्मीर) में आयोजित वितरण शिविर की संक्षिप्त रिपोर्ट।

हडको और भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए हैं, जिसका उद्देश्य हडको की सीएसआर पहल के तहत पूरे देश में दिव्यांगजनों और वरिष्ठ नागरिकों को सहायता और सहायक उपकरणों के वितरण के लिए समर्थन प्रदान करना है।

इस संबंध में हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू, एलिम्को ने जिला समाज कल्याण विभाग, जिला रामबन के साथ मिलकर 24 मार्च 2025 से 26 मार्च 2025 तक जम्मू और कश्मीर के विभिन्न ब्लॉकों- रामबन, गूल और बनिहाल में 3 (तीन) दिवसीय वितरण शिविर आयोजित किए।

इस पहल का उद्देश्य जरूरतमंद व्यक्तियों की सहायता करना है, जो अक्सर बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुँचने के लिए संघर्ष करते हैं। हडको के सीएसआर प्रयास ग्रामीण भारत में लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए इसकी प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं और इस तरह की पहल जरूरतमंद व्यक्तियों के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव ला सकती है और सामाजिक कल्याण और समावेशिता के लिए दोनों संगठनों की साझा प्रतिबद्धता को उजागर करती है। यह सामाजिक कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के हिस्से के रूप में समाज के हाशिए पर और कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए एक पहल है।

तीन दिवसीय वितरण शिविरों की कुछ तस्वीरें इस प्रकार हैं:

Housing and Urban Development Corporation
(An Indian Public Sector Undertaking)
GPS Map Camera
Gool
7293+374, Near Sdm Office, Gool, 182144,
Lat 33.267364° Long 75.00342°
25/03/2025 12:14 PM GMT +05:30
Google

Housing and Urban Development Corporation
(An Indian Public Sector Undertaking)
HILLKINS

बीआईएस (BIS) पर एनबीसी की बैठक

डॉ. दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख, जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय, बीआईएस पर एनबीसी की बैठक में 25.8.2025 को सम्मिलित हुए जहां शहरी क्षेत्रों में सस्टेनेबिलिटी पर हडको के सुझावों को स्वीकार किया ।

चिनाब वैली पावर प्रोजेक्ट लिमिटेड के साथ पनबिजली परियोजना के लिए ऋण समझौता

डॉ. दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख, जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय ने चिनाब वैली पावर प्रोजेक्ट लिमिटेड द्वारा पकल दुल, जिला किश्तवाड़, जम्मू-कश्मीर में 1000 मेगावाट की पनबिजली परियोजना के लिए 1073.75 करोड़ रुपये के ऋण की मंजूरी के लिए 24.06.2025 को ऋण समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस परियोजना के लिए जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय ने 12.09.2025 तक 138.90 करोड़ रुपये की राशि जारी कर चुका है।

वार्षिक खेल दिवस समारोह

हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू ने 02.03.2025 को जम्मू और कश्मीर खेल परिषद, ग्रीन फील्ड, गांधी नगर जम्मू में अपने वार्षिक खेल दिवस का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य आपसी भाईचारा, टीम भावना और स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना था। इस कार्यक्रम में हडको जम्मू की टीम और उनके परिवारों की सक्रिय भागीदारी देखी गई।

विभिन्न प्रकार के खेल और मनोरंजक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। रस्साकशी, 100 मीटर की दौड़, म्यूजिकल चेयर, लेमन रेस जैसे आउटडोर खेलों ने प्रतिभागियों के बीच प्रतिस्पर्धात्मक भावना को उभारा।

हडको जम्मू के क्षेत्रीय प्रमुख डॉ. दीपक बंसल ने इस अवसर पर उपस्थित होकर कर्मचारियों और उनके परिवारों की सक्रिय भागीदारी के लिए हार्दिक सराहना की, जिससे यह कार्यक्रम एक शानदार सफलता बन गया। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन के शब्दों से सम्मानित भी किया।

कार्यक्रम का समापन शानदार दोपहर के भोजन के साथ हुआ, जिससे सभी उपस्थित लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने और दिन की सफलता का जश्न मनाने का अवसर मिला। वार्षिक खेल दिवस हडको जम्मू परिवार के बीच टीमवर्क, फिटनेस और स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन को बढ़ावा देने के लिए एक आदर्श मंच के रूप में कार्य करता है।

यह आयोजन एक शानदार सफलता थी, जिसमें एकता के मूल्यों पर जोर दिया गया और सभी को संजोने के लिए अद्भुत यादें दी गईं। इस कार्यक्रम की कुछ तस्वीरें नीचे दी गई हैं:

हडको जम्मू वार्षिक खेल दिवस-2025
HUDCO Jammu Annual Sports Day–2025
हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लि0
(भारत सरकार का उपक्रम)
हडको, क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू-180012

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू ने 21.06.2025 को "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" की थीम पर आधारित 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का उत्सव मनाया और इस प्राचीन विद्या को अपनाने के लिए सभी के लिए एक योग सत्र का आयोजन किया तथा विभिन्न आसन, प्राणायाम और ध्यान अभ्यास किए गए। योग दिवस का आयोजन संयुक्त रूप से हडको एवं अतिरिक्त महानिदेशक दूरसंचार द्वारा हडको परिसर मे आयोजित किया गया ।

डॉ. दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख, जम्मू ने सभी के जीवन में योग के महत्व को समझाते हुए कहा कि योग केवल व्यायाम नहीं है, यह जीवन जीने का एक तरीका है जिसकी खोज और अभ्यास प्राचीन भारत में सबसे पहले किया गया था। यह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए शारीरिक आसनों, श्वास व्यायाम और ध्यान का संयोजन करता है। यह एक अत्यंत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित आध्यात्मिक अनुशासन है, जो मन और शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर केंद्रित है। योग का समग्र दृष्टिकोण जीवन के सभी क्षेत्रों में सामंजस्य लाता है। योग रोगों की रोकथाम, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और जीवनशैली से जुड़ी कई बीमारियों के प्रबंधन के लिए भी जाना जाता है। आज योग पूरे विश्व में लोकप्रिय है और इसके अनेक लाभ हैं।

हडको कार्मिकों द्वारा किये गये विभिन्न योगासन

HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT CORPORATION LIMITED
(A GOVT. OF INDIA ENTERPRISE)
11TH INTERNATIONAL YOGA DAY – 21ST JUNE, 2025
REGIONAL OFFICE, HUDCO, BHAWAN, OB-08,
RAILHEAD COMPLEX, JAMMU-180012.

विश्व पर्यावरण दिवस

जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय ने 05 जून 2025 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया । डॉ. दीपक बंसल, क्षेत्रीय प्रमुख जम्मू ने पर्यावरण स्थिरता के महत्व पर प्रकाश डाला और सभी कर्मचारियों से प्रकृति का संतुलन बनाए रखने और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों की भलाई के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा कि स्वस्थ शरीर और स्वस्थ दिमाग के लिए स्वस्थ वातावरण का होना आवश्यक है। हमारी पहली प्राथमिकता अपने पर्यावरण की रक्षा करना है। हर दिन को पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए। उन्होंने सभ्री कर्मचारियों से प्लास्टिक और ठोस अपशिष्ट संकट से निपटने के लिए दैनिक जीवन में पर्यावरण के प्रति जागरूक विकल्प अपनाने का आग्रह किया। हरित जीवन को प्रोत्साहित करने और हमारी धरती माता के प्रति जिम्मेदारी की भावना पैदा करने के लिए, क्षेत्रीय कार्यालय हडको जम्मू ने अपने प्रत्येक कर्मचारी को एक पौधा और एक सौर लैंप भी वितरित किया।

******

hudco

डॉ. दीपक बंसल

क्षेत्रीय प्रमुख जम्मू

आपदा प्रबंधन और जम्मू-कश्मीर

भारत कई प्राकृतिक और मानव-निर्मित आपदाओं जैसे, भूकंप, भूस्खलन, चक्रवात, बादल विस्फोट, बाढ़, सूखा, सुनामी, आसमान/बादलों से गिरने वाली बिजली (बिजली गिरना), भूमि का धंसना, वन की आग, रासायनिक रिसाव, प्रदूषण, दुर्घटनाएँ, भवन/अवसंरचना का ढहना आदि के प्रति संवेदनशील है, जो हर साल कई जिंदगियों को ले लेता है और अरबों भारतीय रुपये की अवसंरचना को नुकसान पहुँचाता है। इससे न केवल जनसंख्या के दैनिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है, बल्कि भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि भी घटती है। न्यूजीलैंड एक उदाहरण है, जहां कुछ भूकंपों ने उनकी अर्थव्यवस्था की वृद्धि को नकारात्मक आंकड़ों में पहुँचाया है। जम्म-कश्मीर इस मामले में कोई अपवाद नहीं है, जो उपरोक्त सभी आपदाओं का शिकार है, सिवाय सुनामी के और भूकंप, भूस्खलन और बादल विस्फोट का प्रभाव इस पहाड़ी हिमालयी राज्य/संघ शासित क्षेत्र में बहुत अधिक है। जनसंख्या घनत्व कम है और जम्मू-कश्मीर की अर्थव्यवस्था भी कम है, जो मुख्यतः कृषि और पर्यटन पर निर्भर है और ये क्षेत्र इन आपदाओं द्वारा बुरी तरह प्रभावित होते हैं। जम्मू और कश्मीर अन्य देशों के साथ भी सीमाएं साझा करता है, जो भारत के प्रति मित्रवत नहीं हैं और सीमाओं (एलओसी, आईबी और एलएसी) पर अत्यधिक दुश्मनी की स्थिति है, जहां दैनिक आधार पर जीवन और अवसंरचना पर प्रभाव डालने वाली गोलीबारी की आती हैं। जम्मू-कश्मीर राज्य/संघ राज्य प्रदेश ने कई युद्धों का सामना किया है, जिसमें हाल का युद्ध मई 2025 में हुआ था।

जम्मू-कश्मीर में, प्रधान मंत्री आवास योजना (PMAY) के तहत आवास की कमी का समाधान किया जा रहा है और वर्तमान आवास भंडार को भी फिर से संशोधित करने की आवश्यकता है क्योंकि यह क्षेत्र राष्ट्रीय भवन कोड (एनबीसी) के अनुसार भूकंपीय क्षेत्र IV और V में आता है, जिसका मतलब है भूकंप के होने का उच्च जोखिम है । जम्मू-कश्मीर में अधिकांश घर सुरक्षित जगह पर नहीं बने हैं और सुरक्षित निर्माण तकनीकों के साथ नहीं बने हैं, इसलिए ये काफी कमजोर हैं। पहले, इस क्षेत्र में एक विशिष्ट आवासीय प्रकार प्रचलित था, जिसे धज्जी-देवारी के नाम से जाना जाता है, जिसमें दीवारों में लकड़ी का ढांचा और पर्याप्त समर्थन प्रदान किया गया था और इन्हें स्थानीय छोटे आकार के पत्थरों से भरा गया था और छत का स्वरूप गाब्ल/पिरामिडल था जिसमें

लकड़ी के राफ्टर्स और धातु की चादरें थीं। लकड़ी के ढांचे भूकंप के दौरान झटकों को अवशोषित करते हैं और हल्के वजन की छतें यदि भूकंप से संबंधित भवनों के ढहने की स्थिति में चोटों को कम करती हैं। हालाँकि यह तकनीक भारत के NBC में शामिल नहीं है, लेकिन कई शोधों ने दिखाया है कि यह पिछले भूकंपों में जानों के नुकसान को कम करने में काफी प्रभावी साबित हुई है।

प्लेट 1: पारंपरिक घरों की धज्जी-देवारी प्रणाली की कुछ तस्वीरें गूगल से

प्लेट 2: गूगल से कुछ तस्वीरें धज्जी-देवारी प्रणाली की इंजीनियर्ड घरों की यह एक सुधारित स्थानीय निर्माण प्रणाली है जो स्थानीय निर्माण सामग्री और स्थानीय कौशल का उपयोग करती है। इसमें कुछ इंजीनियरिंग इनपुट प्रदान किए जा सकते हैं, ताकि इस प्रणाली को अधिक टिकाऊ और सुरक्षित बनाया जा सके। इस इंजीनियरिंग ढाजी-दीवारी प्रणाली में, लकड़ी के ढांचे प्रदान करने का पारंपरिक ज्ञान एक वैज्ञानिक तरीके से उपयोग किया गया है ताकि सीमित ईंट प्रणाली में ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज लोड को सहन किया जा सके, जहाँ लोड पथ अधिक वैज्ञानिक और सरल है और ये भूकंप और हवा जैसी पार्श्व बलों के प्रति अधिक प्रतिरोधी होते हैं। हालाँकि, उच्च हवाओं के लिए, छत प्रणाली में क्रॉस ब्रैसिंग और ईंटों के साथ एंकरिंग जैसे सुधार की भी आवश्यकता होती है।

भूकंपों के लिए आपदा प्रबंधन का ध्यान बड़े पैमाने पर निर्माण सामग्री और निर्माण प्रणालियों द्वारा रखा जा सकता है, लेकिन केवल निर्माण सामग्री/तकनीकें भूस्खलनों या बादल फटने का ध्यान नहीं रख सकतीं। इनका प्रबंधन उचित भूमि उपयोग योजना और भूमि का क्षेत्र निर्धारण करके किया जा सकता है और इन्हें राज्य/संघशासित प्रदेश की भवन योजना और भवन उपनियमों में शामिल करके। भारत का संवेदनशीलता एटलस, जिसे निर्माण सामग्री प्रौद्योगिकियों प्रोमोशन काउंसिल (BMTPC) द्वारा प्रकाशित किया गया है, इस संदर्भ में उपयुक्त सुझाव/निर्देश दिए गए हैं। भवन समरूपता, ढलानों से दूरी के लिए कुछ योजना मानदंड स्थानीय भाषाओं में इस प्रकार प्रस्तुत किए गए हैं:

<u>प्लेट 3: सुरक्षित भवनों के योजना और निर्माण के लिए कुछ चित्रण (बीआईएस के एनबीसी से लिया गया)</u>

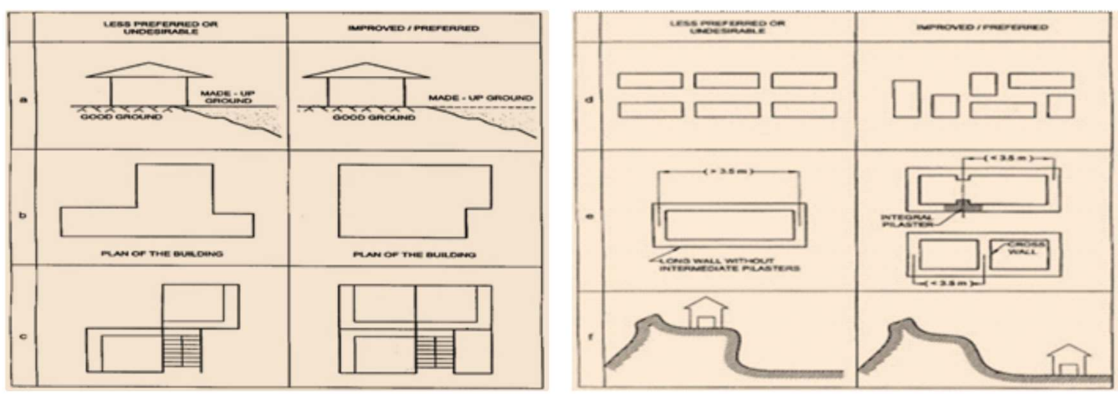

साहित्य में ज्ञान एक अच्छी मात्रा उपलब्ध है ताकि इन आपदाओं से निपटने/प्रबंधन के लिए आवश्यक पहचान, योजना और हस्तक्षेप किया जा सके और हमें बस इन आपदाओं से जीवन और संपत्तियों की रक्षा के लिए पहले से कार्य करना होगा। हडको ने चमोली (भूकंप), लातूर (भूकंप), जबलपुर (भूकंप), उत्तरकाशी (भूकंप), उड़ीसा (साइक्लोन), गुजरात (भूकंप), आंध्र प्रदेश (बाढ़), तमिलनाडु (सुनामी), केरल (सुनामी), जम्मू और कश्मीर (भूकंप), लद्दाख (बादल फटने) और कई अन्य स्थानों पर आपदा के बाद के पुनर्निर्माण कार्य में काफी प्रशंसनीय काम किया है। हडको ने परामर्श सेवाएँ प्रदान कीं और स्थानीय निर्माण सामग्री और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करते हुए कुछ प्रदर्शनी निर्माण भी किए, जिसमें इन आपदा प्रभावित क्षेत्रों में सुरक्षित निर्माण में लाभार्थियों को शामिल किया गया।

प्लेट 4: हडको द्वारा गुजरात और उडीसा में किए गए कार्यों की कुछ तस्वीरें।

प्लेट 5: लेह में घर: पारंपरिक घर

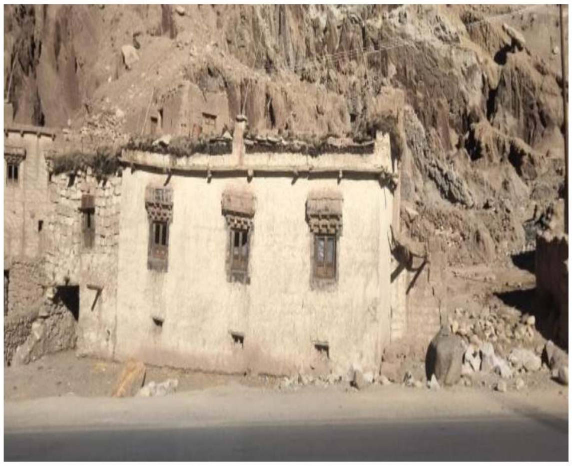

प्लेट 6: ल्हासा में घर: स्थिरीकरण करने वाली सामग्रियों जैसे सीमेंट/चूना का उपयोग करके स्थानीय मिट्टी से निर्मित आवास

इन घरों की स्थिति अब भी अच्छी है, जैसा कि 2025 में देखा गया था और अब, चूंकि वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन हो रहा है और लेह में बार-बार बारिश हो रही है, लोग स्थानीय रूप से मिट्टी से स्थिर ब्लॉक बना रहे हैं और उनका उपयोग अपने घरों और इमारतों के निर्माण में कर रहे हैं क्योंकि जलाए गए मिट्टी के ईंटें उपलब्ध नहीं हैं और अन्य विकल्प जैसे कि सीमेंट कंक्रीट ब्लॉक (खोखले/ठोस), एएसी ब्लॉक या तो उपलब्ध नहीं हैं या महंगे हैं।

बादल फटना एक अपेक्षाकृत नया घटना है जो काफी बार हो रहा है और यह अधिक से अधिक गंभीरता के साथ हो रहा है, विशेषकर उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी राज्यों/संघीय प्रदेशों में। यह वैश्विक तापमान वृद्धि से संबंधित जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहा है और हमें इस आपदा के खिलाफ एक टिकाऊ सुरक्षा उपाय ढूंढना चाहिए क्योंकि यह एक संक्षिप्त अवधि में अत्यधिक वर्षा लाता है, जो बाढ़, भूस्खलन और प्रभावित क्षेत्रों के सभी बुनियादी ढांचे को काटने का कारण बनता है।

प्लेट 7: गूगल से लिया गया क्लाउड बस्ट का चित्र:

अतीत में हडको द्वारा प्रोत्साहित और लागू की गई नई निर्माण तकनीकें:

हडको Affordable और Sustainable आवास समाधान प्रदान करने में अग्रणी रहा है सभी क्षेत्रों (EWS, LIG, MIG और HIG) के लिए पूरे देश में जिनमें एस्थेटिक और कार्यात्मक डिज़ाइन हैं जो सभी भारतीय मानकों और स्थानीय निर्माण कानूनों के अनुसार हैं और लाभार्थियों को शामिल करते हैं। हडको स्थानीय निर्माण सामग्री और स्थानीय निर्माण प्रथाओं को नवाचार के साथ बढ़ावा देता है ताकि स्थानीय जनसंख्या की कुशलता को उन्नत किया जा सके और वे सुरक्षित, स्थायी और किफायती निर्माण सामग्री और आवास बनाकर अपनी आजीविका कमा सकें। स्थानीय जलवायु, सामाजिक ताना-बाना और समाज की संवेदनशीलता हमेशा भौतिक बुनियादी ढांचे की योजना और डिज़ाइन में एक महत्वपूर्ण पैरामीटर होते हैं। हडको द्वारा पूरे देश में निर्माण केंद्रों को बढ़ावा दिया गया है ताकि वे प्रयोगशाला से जमीन तक ज्ञान को स्थानांतरित कर सकें और लोगों को सहायता प्रदान कर सकें। हडको द्वारा किए गए पिछले कार्य में इनमें से कुछ निर्माण तकनीकें शामिल हैं.

प्लेट 8: हडको द्वारा अतीत में उपयोग की गई कुछ अभिनव निर्माण तकनीकें:

इन इमारतों के निर्माण में विभिन्न प्रकार की निर्माण सामग्री और निर्माण प्रौद्योगिकियों का उपयोग एक बहुत ही सौंदर्यपूर्ण तरीके से किया गया है। फ्लाई-एश ईंट, रैट ट्रैप बोंडेड मैसनरी, RCC भराव स्लैब, ईंट गुंबद, ईंट मेहराबें, फेरो-सीमेंट चैनल, फ़ुनिकुलर शेल्स, बिना फ्रेम के दरवाजे/खिड़की के फ्रेम, आईपीएस फर्श, ईंट जल्ली, प्रीकास्ट सदस्य, फेरो-सीमेंट पानी की टंकियाँ आदि, इन इमारतों में उपयोग की गई हैं, इनमें से कुछ लोड-बेयरिंग थीं और कुछ RCC फ्रेम वाले निर्माण थे। इन सभी इमारतों का निर्माण होने के 20-25 साल बाद भी ये अच्छी स्थिति में हैं और न्यूनतम रखरखाव में नरेला, दिल्ली में हैं। इन सभी इमारतों का डिज़ाइन पूरी तरह से घर में सर्वश्रेष्ठ वास्तुकार (श्री राजीव सूद) और संरचनात्मक इंजीनियर (डॉ. दीपक बंसल) द्वारा श्री आर के सफ़ाया के मार्गदर्शन में किया गया था। इनमें से कुछ तकनीकों को जम्मू और कश्मीर में भी दोहराया जा सकता है।

******

hudco
A NAVRATNA CPSE

स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू ने स्वतंत्रता दिवस-2025 को बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया। जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारियों ने हमारे स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। स्वतंत्रता दिवस समारोह ने न केवल हमारे वीरों के बलिदान को सम्मानित किया, बल्कि कर्मचारियों के बीच राष्ट्रीय एकता और सद्भाव का संदेश भी फैलाया और एक स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में हमें अपनी ज़िम्मेदारियों का स्मरण कराते हुए हमारे राष्ट्र को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर श्री आर.के. वर्मा, संचार लेखा नियंत्रक श्री अमानुल्लाह टाक, संयुक्त संचार लेखा नियंत्रक, दूरसंचार विभाग, श्री खुशवंत राय (आईटीएस) अपर महानिदेशालय दूरसंचार और श्री द्वारका करोल, निदेशक (प्रशासन), जम्मू-कश्मीर लाइसेंस प्राप्त सेवा क्षेत्र, दूरसंचार विभाग भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश के स्वतंत्रता दिवस का सम्मान करना और कर्मचारियों में राष्ट्र के प्रति एकता की भावना का संचार करना था। समारोह देशभक्ति गीतों और कविता पाठ के साथ मनाया गया। जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साह और देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत होकर स्वतंत्रता दिवस-2025 मनाया।

HUDCO
BHAWAN
CONTROLLER COMMUNICATION ACCOUNT

"वकालत का क्या अर्थ"

कॉलेज स्टूडेंट्स के ग्रुप ने, एक वकील साहब से पूछा... सर, "वकालत" का क्या अर्थ है.?

वकील साहब ने कहा :- इसके लिये, मैं एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ।
मान लो, कि दो व्यक्ति मेरे पास आते हैं। एक बिल्कुल साफ सुथरा और दूसरा बेहद गंदा है। मैं उन दोनों को सलाह देता हूँ कि वे नहा कर साफ सुथरे हो जाएं।

अब तुम लोग बताओ कि, उनमें से कौन नहाएगा.?.
एक स्टूडेंट ने कहा, "जो गंदा है वो नहाएगा।
वकील ने कहा :- "नहीं, केवल साफ व्यक्ति ही ऐसा करेगा..क्योंकि, उसे नहाने की आदत है। जबकि गंदे आदमी को तो सफाई का महत्व मालूम ही नहीं।

वकील: अब बताओ कौन नहाएगा.?.
दूसरे स्टूडेंट ने कहा, "साफ व्यक्ति।"
वकील ने कहा,"नहीं, गंदा व्यक्ति नहाएगा; क्योंकि, उसे सफाई की जरूरत है।
अब बताओ कौन नहाएगा.?."
दो स्टूडेंट ने कहा, "जो गंदा है वो नहाएगा।

वकील ने कहा, "नहीं, दोनों नहाएंगे..क्योंकि, साफ व्यक्ति को नहाने की आदत है और गंदे को नहाने की जरूरत। अब बताएं कौन नहाएगा.?.
अब तीन स्टूडेंट्स एक साथ बोल पड़े, "जी, दोनों नहाएंगे।

वकील ने कहा, "गलत, कोई नहीं नहाएगा, क्योंकि गंदे को नहाने की आदत नहीं जबकि साफ को नहाने की जरूरत नहीं। अब बताएं कौन नहाएगा.?.
एक स्टूडेंट विनम्रता पूर्वक बोला, "सर, आप हर बार अलग-अगल जवाब देते हैं और हर जवाब सही मालूम पड़ता है। हमें सही जवाब कैसे मालूम होगा.?."

वकील साहब बोले, "बस, यही तो "वकालत" है...महत्वपूर्ण ये नहीं है, कि वास्तविकता क्या है...बल्कि, महत्वपूर्ण ये है कि, आप अपनी बात को सही साबित करने के लिए कितने संभावित तर्क प्रस्तुत कर सकते हैं....!!

अश्वनी कुमार,
प्रबंधक (आई टी)
जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय

मेरी 28वीं श्री अमरनाथ यात्रा

यह मेरी 28वीं श्री अमरनाथ यात्रा थी और इस यात्रा का अनुभव काफी अलग और जीवन मे कभी कभार ही होने वाले चमत्कार और मानवीय स्वभाव के अच्छे पहलुओं का परिचय कराने वाला था।

श्री अमरनाथ यात्रा तो जुलाई में शुरू होती हैं पर यात्रा रजिस्ट्रेशन मार्च मे हीं शुरू हो जाती है, पहले हमें मेडिकल करवाना होता है फिर यात्रा पर जाने की डेट लेनी पड़ती हैं जो कि ऑफलाइन और ऑनलाइन रूट परमिट डेट के बाद मिलता हैं जिसकी फीस 200 रुपए होती है। हम ने पहले ग्रुप के दर्शन की डेट परमिट ली जो कि 3 जुलाई की थी।

हम कुल 4 यात्री थे जिन में एक मेरा दोस्त और उस का बेटा और मेरा बेटा था। हमें सबसे पहले जम्मू बेस कैंप में रिपोर्ट करना था क्योंकि यात्रा सुबह 3 से 4 बजे बेस कैंप से निकलती है। सुबह जब यात्रा निकलने का टाइम आया तो सब यात्री को बालटाल और पहलगाम जाने के लिए अलग अलग कर दिया। "बम बम भोले" और "हर हर महादेव" के जयकारों के बीच, जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सुबह भगवती नगर स्थित “यात्री निवास आधार शिविर” से अमरनाथ यात्रा के पहले जत्थे को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, सबसे पहले बालटाल की यात्रा को रवाना किया और चंद्रकोट में डिप्टी सीएम श्री सुरेंद्र चौधरी जी ने पहले जत्थे का स्वागत किया और सभी यात्रियों को लंगर में प्रसाद लेने को कहा लंगर में डोसा, जलेबी, चना पुरी, राजमा चावल, हलवा और अनेकों पकवान थे सब यात्रियों ने प्रसाद लेने के बाद आगे की यात्रा शुरू की।

श्रीनगर में पहले जत्थे का स्वागत जम्मु के मुख्यमंत्री श्री उमर अब्दुला जी ने किया और बालटाल की और रवाना किया बालटाल लंगर की सजावट मुख्य रूप से मुफ्त भोजन और श्रद्धालुओं को दी जाने वाली सुविधाओं पर केंद्रित होती है, जिसमें तिरंगे की थीम भी शामिल हो सकती है, जैसे कि शिव गौरी सेवा मंडल ने किया था, जो भारत के लिए सम्मान व्यक्त करता है। लंगर में खाने-पीने की व्यवस्था और रहने की सुविधा के साथ-साथ, हर राज्य के भक्तों को अच्छी सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। शाम 6 बजे हम बालटाल पहुंचे, रात हम बालटाल बेस कैंप में हीं रहे और सुबह बालटाल के पास स्थित डोमिल गेट से श्रद्धालु अमरनाथ गुफा के छोटे मार्ग से चढ़ाई शुरू कर देते हैं। बालटाल, अमरनाथ गुफा से लगभग 16 किलोमीटर दूरी पर है 5 बजे बालटाल से जब हमने यात्रा की शुरुआत की तो मेरे दोस्त ने घोड़ा किराये पर लेकर यात्रा करना पसंद किए जबकि मैंने मेरे बेटे के साथ हर हर महादेव का नाम लेकर पैदल ही यह यात्रा करना पसंद किया।

घोड़ा मालिक यहीं के स्थानीय लोग होते हैं और यात्रा सीज़न के दौरान ज्यादा से ज्यादा कमाई करते हैं क्योंकि वे लोग पहाड़ी रास्तों में काफी तेज चलते है। घोड़े पर जाने की वजह से

मेरा दोस्त मुझसे काफी आगे निकल गया और आगे जाकर कहाँ रुकना है या मिलना है इस बारे में कोई बात नही हो पाई। यात्रा के पहले तीन घंटे तो मेरे काफी बढ़िया रहे, पर जैसे-जैसे पहाड़ की चढ़ाई ज्यादा कठीन होने लगी और पहाड़ों की ऊँचाई पे जाने लगे तब उतने ठंड के माहौल मै भी सूरज की रोशनी शरीर को जला रही थी। मेरे पास एक छोटा सा बैग हीं था और अब वह भी मुझे भारी लगने लगा था। हिमालय की भूमि का एक अपना हीं प्रभाव है और वहाँ का सौंदर्य तो लाजवाब है। सूरज की तेज धूप, थकान की वजह से रास्ते के किनारे एक चट्टान पर में लेट गया और अपना बैग मैंने अपने बेटे को दे दिया और ऐसा लगा की अब इस दुनिया मे मेरी और कोई ख्वाहिश बाकी नहीं है। फिर से मैंने यात्रा आरम्भ की और शाम तक बाबा बर्फानी की पवित्र गुफा के पास पहुंचा और बाबा बर्फानी के दर्शन किए उस पल को में पूरे साल भर अनुभव करता हूँ। गुफा के पास किसी को भी रात मे रहने की अनुमति नहीं मिलती इसलिए हम रात को ही बाबा बर्फानी की गुफ़ा से बालटाल की ओर वापिस चल पड़े वहाँ पहले रास्ते में कभी लाइट नही होती थी और अब पूरे रास्ते में लाइट ही लाइट थी।

चलते चलते हमें पता ही नहीं चला की कब हम बालटाल बेस कैंप पहुंच गए हैं, रात के 3 बजे थे और हम टेंट किराये पर लेने के लिए एक टेंट से दूसरे टेंट की और जानें लगे थे और बारिश होने के कारण मुझे टेंट नहीं मिल रहा था। एक टेंट के मालिक ने हम से तीन हजार रुपया मांगे और बेटे के कहने पर मैंने पूरा टेंट किराये पर ले लिया और फिर सबसे पहले हम ने अपने कपड़े बदली किए और सो गए और सुबह जब हम जागे तो बारिश बहुत तेज हो रहीं थी तब मैंने अपने दोस्त को फोन किया और पूछा तुम कहाँ पर हो तो उसने कहा हमने कार पार्किंग के पास ही टेंट ले लिए था और हम बारिश रुकने का इंतजार करने लगें जब बारिश रुकी तो हम कार की और भागने लगे, जब हम अपनी कार के पास गए तो मेरा दोस्त पहले ही कार के पास खड़ा था। हम कार में बैठे और ब्रेकफास्ट हमने सोनमर्ग में डोगरा वैष्णो ढाबा में किया और जम्मू की ओर चल पड़े, रात को हमने पीड़ा में राजमा चावल खाएं और अपने घर जम्मू की और चल पड़े और रात 11 बजे हम जम्मू अपने घर पहुंचे।

हर हर महादेव ।

प्रवीण कुमार
एम टी एस
जम्मू क्षेत्रिय कार्यालय

सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन : कश्मीर के बडशाह

सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन (1420–1470 ई.) कश्मीर के इतिहास के महानतम शासकों में से एक माने जाते हैं। उनका शासनकाल कश्मीर के लिए स्वर्णयुग साबित हुआ। जहाँ उनके पिता सुल्तान सिकंदर को धार्मिक असहिष्णुता और कट्टरता के लिए जाना जाता है, वहीं ज़ैन-उल-आबिदीन ने उदारता, सहिष्णुता, कला-संवर्द्धन और प्रजा-कल्याण की नीतियों से कश्मीर को नई दिशा दी। उनके कारण ही उन्हें "बड शाह" यानी "महान सम्राट" कहा गया।

ज़ैन-उल-आबिदीन का सबसे बड़ा योगदान उनकी धार्मिक सहिष्णुता की नीति थी। उन्होंने सभी धर्मों और समुदायों को समान दृष्टि से देखा। हिन्दू मंदिरों का पुनर्निर्माण करवाया, ब्राह्मणों और विद्वानों को संरक्षण दिया, और उन्हें प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। उन्होंने न केवल मुसलमानों और हिन्दुओं में भाईचारे को बढ़ावा दिया बल्कि कश्मीरियत की उस भावना को मज़बूत किया जिसमें विविधता के बीच एकता का आदर्श निहित है।

उनके शासनकाल में न्याय-प्रणाली को निष्पक्ष और सरल बनाया गया। उन्होंने इस्लामी कानूनों के साथ-साथ स्थानीय प्रथाओं को भी मान्यता दी, ताकि सभी समुदायों को न्याय मिल सके। कठोर दंड के स्थान पर उन्होंने दया और सुधार पर ज़ोर दिया। इसने आम जनता के बीच शासन के प्रति विश्वास और निष्ठा को मज़बूत किया।

ज़ैन-उल-आबिदीन ने अर्थव्यवस्था और कृषि को सशक्त बनाने के लिए कई कदम उठाए। उन्होंने नहरों का निर्माण कराया, सिंचाई व्यवस्थाओं को सुधारा और नए कृषि उपकरणों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। किसानों पर कर का बोझ कम किया और इसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन बढ़ा और जनता समृद्ध हुई। व्यापार को भी प्रोत्साहित किया गया, जिससे कश्मीर की आर्थिक स्थिति मज़बूत बनी।

बडशाह के शासनकाल में कश्मीर शिल्प और हस्तकला का केन्द्र बन गया। कालीन बुनाई, काग़ज़ निर्माण, लकड़ी की नक्काशी, धातु शिल्प और कढ़ाई कला को संरक्षण मिला। इन कलाओं ने कश्मीर को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई और आज भी कश्मीर की

शिल्पकला उन्हीं की विरासत मानी जाती है। उन्होंने विदेशी शिल्पकारों को आमंत्रित कर स्थानीय कारीगरों को प्रशिक्षण दिलवाया।

सुल्तान ने संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। फ़ारसी, संस्कृत और कश्मीरी भाषाओं के विद्वानों को संरक्षण मिला। संस्कृत ग्रंथों का फ़ारसी में तथा फ़ारसी साहित्य का संस्कृत में अनुवाद हुआ। इस तरह ज्ञान का आदान-प्रदान हुआ और सांस्कृतिक मेल-मिलाप को बढ़ावा मिला। बड शाह के शासनकाल में ही प्रसिद्ध कश्मीरी इतिहासकार जो नराजने कल्हण की राजतरंगिणी का विस्तार लिखा, जिसे अक्सर "द्वितीय राजतरंगिणी" कहा जाता है।

ज़ैन-उल-आबिदीन ने वास्तुकला के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया। उनके समय में मस्जिदों, मंदिरों, पुलों और सरायों का निर्माण हुआ। उन्होंने झेलम नदी पर ज़ैन कदल का निर्माण करवाया, जिससे व्यापार और आवागमन सुगम हुआ। उनकी वास्तुकला में स्थानीय शैली और इस्लामी प्रभाव का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है।

वे केवल एक प्रशासक ही नहीं, बल्कि संवेदनशील और प्रजा-प्रिय शासक भी थे। उनके दरबार में प्रजा की समस्याओं को सुना जाता था और तुरंत समाधान निकाला जाता था। वे दयालु और उदार स्वभाव के थे, इसलिए प्रजा उन्हें "बड शाह" कहकर सम्मानित करती थी।

सुल्तान ज़ैन-उल-आबिदीन का शासनकाल कश्मीर के इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। धार्मिक सहिष्णुता, न्यायपूर्ण नीतियाँ, कृषि और आर्थिक सुधार, कला व शिल्पकला का उत्थान, शिक्षा और संस्कृति का संरक्षण तथा वास्तुकला में योगदान—इन सभी ने मिलकर कश्मीर को एक समृद्ध और प्रगतिशील राज्य बना दिया। उनकी नीतियों ने यह सिद्ध किया कि सहिष्णुता, समन्वय और प्रजा-कल्याण ही किसी शासक को महान बनाते हैं। इसी कारण वे आज भी कश्मीर की सामूहिक स्मृति में बड शाह के रूप में जीवित हैं।

उन्मेष कान्त शाह
पुत्र, श्रीमती पूर्णिमा भट्ट,
प्रबंधक (प्रशासन)
जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय

“विकसित भारत का सपना“

हम सब ने मिलकर देखा है यह सपना की 2047 तक अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे
आओ हम सब मिलकर खाएं यह कसम की देश से धार्मिक उन्माद, जातपात, उग्रवाद
नक्सलवाद, क्षेत्रवाद या फिर हो भ्रष्टाचार सब को देश से दूर भगाएँगे
और इन सब बुराइयों के रहते हम विशव गुरु नहीं कहलाएंगे ।
आओ हम सब मिलकर खाये यह कसम की अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

अपने आस पास रखेंगे साफ – सफाई और वातावरण को स्वच्छ बनाएँगे।
हर तरफ हो सुगंध और खुशियां, हम अपनापन फैलाएंगे
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

जवान, किसान, मजदूर और देश के हर नागरिक को योग का महतव बताएँगे
तभी हम सब मिलकर एक स्वस्थ भारत बना पाएंगे।
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

अलग-अलग फूल है इस बाग में हर एक फूल को महकाएंगे,
एक हैं और अनेक भी फिर भी एकता हम दिखाएंगे
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

हर कोई पेड़ लगाए एक फिर धरती माँ को हरा – भरा बनाएँगे, सब धर्म है एक विश्व में
सबको अपनाकर वासुदेव- कुटुंबकम का पाठ पढ़ाएंगे।
आओ हम सब मिलकर खाये यह कसम कि अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

भारत माँ के लाल हैं हम सब भारत माँ के चरणों में कोटि-कोटि शीश नवाएंगे।
सबका साथ, सबका विकास और एकता की ताकत दुनिया को दिखाएंगे
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि 2047 तक अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

तिरंगा झण्डा शान है हमारी और इस झंडे को हर घर फहराएंगे,
खुशियां बाटेंगे और तिरंगे की शान बढ़ाएंगे
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

अपने देश के शहीदों के बलिदानो को कभी नहीं भुलायेंगे,
वीर नारियों का हमेशा करंगे सम्मान और कभी नहीं विसराएंगे।
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बुध और पारसी हम सब भाई मिलकर, हर मुसीबत दूर भगाएँगे।
कोई भी षड्यंत्रकारी ना पाए कामयाब, हर भारतीय को सजग बनाएंगे।
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

जल, थल, नभ, हर क्षेत्र मे देश को आगे बढ़ाएँगे और किसी बाहर वाले देश की चौदराहट हम नहीं सह पाएंगे।
आओ हम सब मिलकर खायें यह कसम कि 2047 तक अपने देश को विकसित राष्ट्र बनाएंगे।

सुखदेव कुमार
परिवहन सहायक
क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू

हमारी प्रकृति

हे ईश्वर, यह प्रकृति, आपके बिना कोई बना नहीं सकता ।
सुबह-सुबह पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ें
जीवन की एक ऐसी खूबसूरती है जिसे कोई सजा नहीं सकता।
हे ईश्वर, यह प्रकृति, आपके बिना कोई बना नहीं सकता ।

हरे-भरे पेड़ और भिनभिनाती मधुमक्खियाँ, हरी-भरी घास सब साफ़
इतना प्यारा बगीचा कोई सजा नहीं सकता ।
हे ईश्वर, यह प्रकृति, आपके बिना कोई बना नहीं सकता ।

सूरज की चमक और फूलों का खिलना और हवा में तितलियों का नाच
प्रकृति की ऐसी सुंदरता है जिसे कोई समाप्त कर नहीं सकता।
हे ईश्वर, यह प्रकृति, आपके बिना कोई बना नहीं सकता ।

प्रकृति ने दिए हमें बहुत सारे उपहार, नष्ट ना करने की लगाती गुहार
कर्तव्य इसके ध्यान रखने का मनुष्य भुला नहीं सकता।
हे ईश्वर, यह प्रकृति, आपके बिना कोई बना नहीं सकता ।

गुनीत कौर
सुपुत्री श्रीमती दपिंदर कौर
प्रबंधक (वित्त)/
हिन्दी नोडल सहायक
जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय

आज के युवा और सोशल मीडिया का असर

आज के समय में सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब और स्नैपचैट जैसे प्लेटफॉर्म ने दुनिया भर के लोगों को आपस में जोड़ने का काम किया है। खासकर युवाओं के बीच सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत तेजी से बढ़ा है। एक समय था जब हम सूचना पाने के लिए किताबें पढ़ते थे या टेलीविजन देखते थे, लेकिन आज की युवा पीढ़ी का ज्यादातर समय सोशल मीडिया पर बितता है।

सोशल मीडिया ने जहां हमारे विचारों को व्यक्त करने का माध्यम सरल बना दिया है, वहीं इसके दुष्परिणाम भी नजर आने लगे हैं। बहुत से युवा अपनी जिंदगी के महत्वपूर्ण पल ऑनलाइन साझा करने लगे हैं, जिससे निजता की हदें धुंधली होती जा रही हैं। इसके अतिरिक्त सोशल मीडिया पर झूठी जानकारी और अफवाहें भी तेजी से फैलती हैं, जो समाज में भ्रम और भय का वातावरण बनाती हैं। सोशल मीडिया के फायदे भी कम नहीं है इसके माध्यम से युवाओं ने नए ज्ञान प्राप्त किया है, अपने हुनर को दुनिया के सामने रखा है और रोजगार के नए अवसर भी खोजे हैं। आजकल कई युवा डिजिटल कंटेंट क्रिएटर बनकर अपनी पहचान बना रहे हैं। इसके साथ-साथ समाज सेवा से जुड़े विचार भी सोशल मीडिया पर प्रचारित हो रहे हैं, जो युवाओं को जिम्मेदार बनाते हैं। परंतु, यदि सोशल मीडिया का उपयोग विवेक और सीमित समय के तहत किया जाए तो यह मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डाल सकता है। समय की बर्बादी, आंखों की कमजोरी, ध्यान की कमी और असामाजिक व्यवहार इसके सामान्य परिणाम बन चुके हैं। इसलिए जरूरी है कि हम सोशल मीडिया का संतुलित और सकारात्मक उपयोग करें। जरूरत से ज्यादा समय उसे न दें, भरोसेमंद और सटीक जानकारी को ही साझा करें, और अपनी असली दुनिया को भी समय दें। समाज के हर युवा का कर्तव्य बनता है कि वे सोशल मीडिया को अपने विकास और समाज के उत्थान के लिए उपयोग करें, न कि केवल मनोरंजन और फालतू चीजों के लिए।

आज के युवा यदि सोशल मीडिया का सही उपयोग करें, तो न केवल अपने व्यक्तित्व का विकास करेंगे, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव भी लाएंगे। यही समय है जब हम समझें कि सोशल मीडिया हमारी सोच को बड़ा बना सकता है, यदि हम उसे समझदारी से अपनाएं।

अनन्ता शाह

कक्षा-8

भतीजी श्रीमती पूर्णिमा भट्ट

जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय

"घर से भगवान तक"

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (हडको) के पहले शब्द से जो भाव निकलता है, वह है ''घर''। इस विषय में मैं कहना चाहता हूं कि हमारा शरीर भी एक घर है, और जितना हम इसका ध्यान रखेंगे, उतना ही हम ईश्वर के निकट पहुंच सकते हैं। इसलिए हडको का मतलब है ईश्वर की सेवा करना।

पौराणिक श्लोक में कहा गया है कि आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः। संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शंभो तवाराधनम्।

संक्षेप में कहा जाए तो, इसका अर्थ है कि प्रभु, यह पूरा शरीर आपका घर है, जिसमें आप वास करते हैं और इस शरीर का ध्यान रखना भी हमारा कर्तव्य है। इसके लिए हमें इस पृथ्वी पर भेजा गया है। आज हम आधुनिकता की तरफ जा रहे हैं, जो अच्छी बात है, लेकिन साथ ही साथ हमें अपना ध्यान भी रखना होगा और इसका एक मात्र रास्ता है मेडिटेशन ।

जैसा कि आपने नोट किया होगा कि आजकल की जिंदगी बहुत संघर्षपूर्ण हो गई है, चाहे वह ऑफिस हो, स्कूल हो या बिजनेस हो और इसमें काफी तनाव बढ़ गया है। पहले हमें शारीरिक समस्याएं होती थीं, जिसके लिए हम डॉक्टर को कंसल्ट करते थे, लेकिन आजकल का तनाव इतना बढ़ गया है कि जहां देखो मानसिक समस्याएं पैदा हो गई हैं। हर ऑफिस आजकल किसी मनोवैज्ञानिक को भी अपॉइंट करता है, जिससे उसके कर्मचारी अपना तनाव कम कर सकें और यह सब इसलिए है क्योंकि हम आधुनिकता की दुनिया में बहुत आगे निकल गए हैं और अपने इस शरीर, जो कि हमारा आंतरिक घर है, उस पर ध्यान नहीं देते।

इस लेख के माध्यम से मैं कहना चाहता हूं कि हमें नियमित शारीरिक व्यायाम के साथ–साथ अपने मानसिक स्वास्थ्य की भी एक्सरसाइज करनी चाहिए, जो केवल मेडिटेशन के जरिए संभव है। इसके लिए हमें थोड़ा एकांत में बैठकर अपनी सांसों पर ध्यान देना होगा। इसका आना और जाना देखना होगा, सिर्फ सांसों पर ध्यान देना है। उस समय अगर मन में कोई विचार आए, तो उसे रोकना नहीं

है, आने देना है, वह अपने आप चला जाएगा। फिर धीरे—धीरे सांसों के जरिए हम अपने मन पर नियंत्रण कर सकते हैं, जिससे हमारा माइंड बहुत मजबूत हो जाएगा। उपरोक्त एक्सरसाइज को हम पहले 8 मिनट, फिर 15 मिनट और धीरे—धीरे बढ़ा सकते हैं और अगर माइंड मजबूत होगा, तो हम हर समस्या का सामना कर सकते हैं, चाहे वह घर पर हो या ऑफिस में और साथ ही साथ हम अपना अच्छा योगदान कर सकते हैं। मैं यहां तक कहना चाहता हूं कि कई लोग मंदिर जाते हैं और भगवान से कुछ मांगते हैं। भगवान भी अपने भक्तों को देते हैं, फिर भी भक्त परेशान रहते हैं क्योंकि कोई भी शांति को नहीं मांगता जो उसके अपने अंदर ही है, यानी भगवान का वास आपके इसी शरीर में है, और वहां तक पहुंचने के लिए केवल चिंतन के माध्यम से ही संभव है।

कई बार हम लोग कहते हैं कि हम उस भगवान को मानते हैं, उसे मानते हैं, कोई अच्छा लेख हो या व्हाट्सएप पर कोई अच्छा मैसेज हो, तो अच्छा मानते हैं, लेकिन जानता कोई नहीं है। हमें उसे जानना है जिसके लिए हम इस धरती पर आए हैं। उपरोक्त पंक्तियों के माध्यम से मैं यही कहना चाहता हूं कि अपने इस घर का अच्छे से (शारीरिक रूप से और मानसिक रूप से) ध्यान रखें और जीवन की सच्चाइयों को जाने, जिससे कोई भी तनाव स्वतः ही खत्म हो जाएगा। इसलिए हडको का पहला शब्द ही घर यानी अपने आप को समर्पित है, जो एक मजबूत इंसान को बनाने का प्रतीक है।

दीपक कुमार नौटियाल
उप महाप्रबंधक (वित)
राइट्स लिमिटेड

हिंदी की विशेष कार्यशाला का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू में हिन्दी में कार्य को वढ़ावा देने के लिए 31.07.2025 को विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला श्री संतोष कुमार, उप निदेशक राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को विशेष तौर पर आमंत्रित किया गया था। श्री संतोष कुमार ने हिन्दी में अनुवाद के लिए सहायक टूल्स की जानकारी दी और सभी को हिन्दी मे अधिक से अधिक कार्य के लिए प्रेरित किया । क्षेत्रीय प्रमुख डॉ. दीपक बंसल ने भी हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए सभी को सलाह दी और आगे भी इस क्रम को जारी रखने के लिए प्रेरित किया ।

"हाउसवाइफ"

मैं थक गयी मुझे भी अब नौकरी करनी है..बस! बड़ी सख्ती के साथ पत्नी ने पति से कहा..
तो पति ने कहा.. मगर क्यों क्या कमी है घर में, आखिर तुम नौकरी क्यों करना चाहती हो?

पत्नी ने शिथिल होकर कहा..क्योंकि मैं जानती हूँ कि..अगर छुट्टी चाहिए तो दफ्तर में काम करो घर में नहीं। बिना तनख्वाह के सबका रौब झेलो.. इतने सारे बॉस से तो अच्छा है कि मैं नौकरी करूँ, इंडिपेंडेंट रहूँ.. छुट्टी भी मिलेगी, घर में रौब भी रहेगा, और मेरी डिग्रियाँ भी रद्दी न बनेंगी| महत्वाकांक्षी लोग रोटी कमाते हैं बनाते नहीं..दिन भर बाई की तरह लगे रहने वाली, स्वयं को बनने सँवरने का समय नहीं देती..तो उसको गयी गुजरी समझा जाता है, बाई भी अपना रौब जमाती है
छुट्टी करती है, बेढंगे काम का पैसा लेती है, पर मैं?

मैं क्या हूँ, मुझे कभी कोई एक्सक्यूज नहीं, कोई तारीफ नहीं, कोई वैल्यू नहीं, और अपेक्षाओं का अंत नहीं, ऊपर से नो ऐबीलिटी.. मैं हूँ ही क्या ? एक मामूली हाउस वाइफ|

पति ने कहा नहीं.. तुम अपने घर की बॉस हो, मगर तुम में कुछ कमी है..आर्डर की जगह रिक्वेस्ट करती हो.., डांटने की जगह रूठ जाती हो..गुस्सा करने वालों को बाहर का रास्ता दिखाने की बजाय मनाती हो.. नौकरी करके रोज बनसँवर कर.. बाहर की दुनियाँ में आपना वजूद बनाना अपने लिए जीना आसान है..लेकिन अपने आप को मिटाकर अपनों को बनाए रखना आसान नहीं होता|

आसान नहीं होता खुद को भुलाकर सबका ध्यान रखना.. तुम हाउस वाइफ नहीं हाउस मैनेजर हो.. अगर तुम घर को मैनेज न करो तो हम बिखर जाएँगे..आदतें तुमने बिगाड़ी हैं हमारी. हम कहीं भी कुछ भी पटकते हैं..जूते कपड़े किताबें बर्तन|

तुम समेटती रही कभी टोका होता..ये कहकर पति ने कहा अब से मैं सच में हैल्प करूँगा तुम्हारी..
चलो मैं ये बर्तन धो देता हूँ, सिंक में पड़े बर्तनों को छूते ही पत्नी नाराज हो गयी ..

अच्छा..अब आप ये सब करोगे? हटो..मैं आपको पति ही देखना चाहती हूँ बीबी का गुलाम नहीं... पति ने कहा..अच्छा शाम को खाना मत बनाना..पिज्जा मँगालेंगे.. कीमत सुनकर पत्नी फिर.. ये फालतू के खर्चे.. घर का बना शुद्ध खाओ..

पति ने कहा.. तुम चाहती क्या हो.. कभी कभी आराम हैल्प देना चाहूँ तो वो भी नहीं और शिकायत भी.. पत्नी ने कहा..कुछ नहीं गुस्सा मुझे भी आ सकता है. थकान मुझे भी हो सकती है, मन मेरा भी हो सकता है.. बीमार मैं भी हो सकती हूँ.. बस चाहिए कुछ नहीं....कभी कभी झुँझलाऊँ, गुस्सा करूँ, तो आप भी ऐसे ही झेल लेना जैसे मैं सबको झेलती हूँ, मेरा हक सिर्फ आप पर है।

हमे नाज है परिवार समर्पित गृहणियों पर| जय हिन्द जय भारत |

(मंजीत भारती)
पत्नी श्री अश्वनी कुमार
प्रबंधक (आई टी)
जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय

जीने की राह

फिर धीरे–धीरे यहाॅ का मौसम बदलने लगा है,
वातावरण सो रहा था अब ऑखें मलने लगा है ।

पिछले सफर की न पूछो, टुटा हुआ एक रथ है,
जो रूक गया था कहीं पर, फिर साथ चलने लगा हैं ।

हमको पता भी नहीं था, वो आग ठंडी पडी थी,
जिस आग पर आज पानी सहसा उबलने लगा है ।

जो आदमी मर चुके थे, मौजूद हैं इस सभा में,
हर एक सच कल्पना से आगे निकलने लगा है ।

ये घोषणा हो चुकी है, मेला लगेगा यहाॅ पर,
हर आदमी घर पहुॅचकर, कपडे बदलने लगा है ।

बातें बहुत हो रही हैं, मेरे–तुम्हारे विषय में,
जो रास्ते में खडा था पर्वत पिघलने लगा है ।

शाम लाल
प्रबंधक (प्रसासन)
जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

“सुकून के दो पल”

खो गया था मैं बस यहाँ, इस जमाने की भीड़ मे
फिर याद आया गाँव था, अपने अंतरमन से जूझ के
याद आया था दौर मेरा, एक वार बचपनों का फिर से
छोड़ कर गम अपना फिर, निकाल पड़ा था गाँव को
सुकून मिला था फिर से मुझे, बैठ गाँव की छाँव मे।

महसूस किया फिर मैंने, स्वाद वही खास था फिर से
लाजवाब खाना था वही, फल और खोई याद फिर से
हरे भरे पहाड़ का और अपने, बड़े बुजुर्गों के प्यार का
अपनों के आस-पास का, फिर से दोस्तों के साथ का
सुकून मिला था फिर से मुझे, बैठ गाँव की छाँव मे।

खुश तो बहुत था मैं यहाँ, पर दिल फिर भी बेचैन था
कई वाशिंदे जो लौटे नहीं कभी, घर शहर मे बनाए थे
जर्जर थे कुछ घर तो बहुत यहाँ, कुछ मे यहाँ तो ताले थे
कुछ घर तो नए भी थे पर, कुछ अभी भी इंतजार मे थे
सुकून मिला था फिर से मुझे, बैठ गाँव की छाँव मे।

काश लौट के एक बार सब, आयें यहाँ अपने गाँव मे
चाहे फिर से चले जाएं, पर भूले ना अपने गाँव को
एक घर हो शहर मे तो क्या, पर एक घर हो गाँव में
रोजी रोटी भी देखो तुम, मगर जुड़े रहो अपने गाँव से
सुकून मिलेगा तुम्हें फिर यहाँ, बैठ गाँव की छाँव मे।

ज्ञान स्वरूप ठाकुर
प्रबंधक (वित्त)/
हिन्दी नोडल अधिकारी

भारत में बैंकिंग का बदलता स्वरूप

भारत की अर्थव्यवस्था के विकास में बैंकिंग प्रणाली की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। बैंक केवल धन जमा करने और ऋण प्रदान करने की संस्था भर नहीं हैं, बल्कि वे आर्थिक विकास, सामाजिक समावेशन और वित्तीय सशक्तिकरण के आधार स्तंभ बन चुके हैं। स्वतंत्रता के बाद से लेकर आज तक भारतीय बैंकिंग ने कई चरणों में परिवर्तन देखा है—राष्ट्रीयकरण से लेकर उदारीकरण और अब डिजिटल क्रांति तक। आज बैंकिंग का स्वरूप केवल शाखाओं और पासबुक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मोबाइल एप्स, इंटरनेट बैंकिंग, डिजिटल वॉलेट, यूपीआई और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक तकनीकों से परिभाषित हो रहा है ।

बैंकिंग का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारत में संगठित बैंकिंग प्रणाली का विकास 18वीं शताब्दी में हुआ । 1770 में स्थापित 'हिन्दुस्तान बैंक' को देश का पहला बैंक माना जाता है। इसके बाद कई प्रेसीडेंसी बैंकों (बॉम्बे, मद्रास और कलकत्ता) का गठन हुआ। आज़ादी के बाद बैंकिंग क्षेत्र को संगठित करने और आम जनता तक पहुँचाने के लिए कई सुधार किए गए ।

1955 में भारतीय स्टेट बैंक (SBI) का गठन हुआ, जिसने ग्रामीण क्षेत्रों में बैंकिंग सेवाओं के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया ।

1969 और 1980 में राष्ट्रीयकरण ने बैंकिंग को जनता से जोड़ दिया और सामाजिक क्षेत्र में निवेश का मार्ग खोला।

1991 की आर्थिक उदारीकरण नीति के बाद निजी और विदेशी बैंकों के प्रवेश ने प्रतिस्पर्धा बढ़ाई और सेवाओं में सुधार लाया।

पारंपरिक से आधुनिक बैंकिंग तक की यात्रा

प्रारंभ में बैंकिंग सेवाएँ मुख्यतः जमा-निकासी, ऋण वितरण और चेक आधारित लेन-देन तक सीमित थीं । ग्राहकों को लंबी कतारों में खड़े रहना पड़ता था । लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण ने बैंकिंग की पूरी तस्वीर बदल दी । आज प्रौद्योगिकी आधारित बैंकिंग सेवाओं के आ जाने से अधिकतर खाताधारक महीनों तक बैंक की शाखा में नहीं जाते है । आज एक क्लिक या टच से भुगतान से लेकर बिजली का बिल तक जमा हो जाता है । प्रौद्योगिकी के कई फायदे हुए हैं:

एटीएम मशीनों ने नकद निकासी को आसान बनाया।

कंप्यूटरीकरण ने खातों के रखरखाव और लेखांकन में पारदर्शिता लाई।

कोर बैंकिंग समाधान (CBS) ने देशभर में कहीं से भी बैंकिंग को संभव बनाया।

नेट बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग ने लेन-देन को चौबीसों घंटे और कहीं से भी करने योग्य बना दिया।

<u>डिजिटलीकरण और बैंकिंग का नया दौर</u>

भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक ने डिजिटल इंडिया अभियान और कैशलेस अर्थव्यवस्था की दिशा में कई पहल कीं । इसका सीधा असर बैंकिंग पर पड़ा।

यूपीआई ने भारत को डिजिटल भुगतान में वैश्विक अग्रणी बना दिया । आज भारत विश्व का सबसे बड़ा डिजिटल भुगतान बाज़ार है । अगस्त माह में यूपीआई के माध्यम से 20 बिलियन से ज्यादा लेन-देन किए गए है । भीम एप, गूगल पे, फोनपे, पेटीएम जैसे प्लेटफार्मों ने आम नागरिकों तक त्वरित और सुरक्षित भुगतान की सुविधा पहुँचाई । आधार-आधारित बैंकिंग ने पहचान सत्यापन को सरल बनाया और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दिया। डिजिटल वॉलेट और वर्चुअल कार्ड ने नकदी रहित लेन-देन की संस्कृति को प्रोत्साहित किया।

<u>वित्तीय समावेशन में बदलता स्वरूप</u>

पहले बैंकिंग सुविधाएँ शहरों तक सीमित थीं। ग्रामीण और वंचित वर्ग इनसे दूर थे। लेकिन हाल के वर्षों में कई योजनाओं ने इस परिदृश्य को बदला।

- प्रधानमंत्री जन-धन योजना के तहत करोड़ों लोगों के बैंक खाते खोले गए।
- सीधे लाभ अंतरण (DBT) ने सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे खातों में पहुँचाना सुनिश्चित किया।
- माइक्रोफाइनेंस और स्मॉल फाइनेंस बैंक ने गरीब और छोटे उद्यमियों तक ऋण उपलब्ध कराया।
- बैंकिंग कॉरेस्पॉन्डेंट मॉडल ने गाँव-गाँव में बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाने में सहायता की ।

बैंकिंग में उभरती प्रौद्योगिकियाँ

बैंकिंग सेवाओं में तकनीकी नवाचारों का प्रभाव गहराई से देखा जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के प्रयोग से चैटबॉट्स और वर्चुअल असिस्टेंट ग्राहक सेवा में लगाए जा रहे हैं।

- ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग सुरक्षित लेन-देन और धोखाधड़ी रोकने के लिए हो रहा है।
- बिग डेटा और एनालिटिक्स ग्राहक की आवश्यकताओं को समझकर व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।
- सायबर सुरक्षा बैंकिंग का नया अहम पहलू बन चुका है, क्योंकि डिजिटल लेन-देन के साथ धोखाधड़ी की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं।

चुनौतियाँ

बैंकिंग का स्वरूप बदलते समय कई चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

सायबर अपराध और डाटा सुरक्षा – डिजिटल लेन-देन में धोखाधड़ी और हैकिंग का खतरा बहुत बढ़ गया है।

डिजिटल साक्षरता की कमी – ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीक का पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा।

बढ़ते गैर-निष्पादित परिसंपत्ति– बैंकों की वित्तीय सेहत पर असर डाल रहे हैं।

प्रतिस्पर्धा का दबाव – फिनटेक कंपनियाँ बैंकों के पारंपरिक व्यवसाय को चुनौती दे रही हैं।

ग्राहक विश्वास बनाए रखना – डेटा गोपनीयता और पारदर्शिता बनाए रखना बड़ी जिम्मेदारी है।

भविष्य की संभावनाएँ

भारत में बैंकिंग का स्वरूप आने वाले वर्षों में और अधिक डिजिटल, सुरक्षित, समावेशी और ग्राहक-केंद्रित होगा ।

- पूर्णतः कैशलेस समाज की ओर बढ़ने की संभावना है ।
- ओपन बैंकिंग और नियोबैंक (केवल डिजिटल बैंक) ग्राहकों को बेहतर और सस्ती सेवाएं देंगे।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग ऋण प्रक्रिया, जोखिम प्रबंधन और निवेश सलाह को और सटीक बनाएँगे।
- हरित बैंकिंग और सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।
- ग्रामीण और कृषि बैंकिंग को और सशक्त बनाया जाएगा ताकि आर्थिक असमानता कम की जा सके।

निष्कर्ष

भारत में बैंकिंग का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील है । यह यात्रा पारंपरिक शाखा आधारित सेवाओं से शुरू होकर आज डिजिटल और तकनीक-संचालित सेवाओं तक पहुँच चुकी है। बैंकिंग ने न केवल अर्थव्यवस्था को गति दी है, बल्कि सामाजिक समावेशन, वित्तीय साक्षरता और पारदर्शिता को भी बढ़ावा दिया है। हालाँकि चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, लेकिन यदि इन्हें दूर किया जाए तो भारत विश्व में सबसे सशक्त और समावेशी बैंकिंग प्रणाली प्रस्तुत कर सकता है।

महेश कुमार

प्रबंधक (राजभाषा)

भारतीय रिज़र्व बैंक, जम्मू

लद्दाख के वन्य जीवन के कुछ चित्र : डॉ. पंकज चंदन

सारस क्रेन परिवार, विजयपुर, जम्मू

कला गर्दन सारस, लद्दाख

फोटो सौजन्य से : डॉ. पंकज चंदन

सिनेरियस गिद्ध

छोटा उल्लू

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

नीली भेड, लद्दाख

फोटो सौजन्य से : डॉ. पंकज चंदन

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एंड अर्बन डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)

जम्मू क्षेत्रीय कार्यालय

हडको भवन, ओ0. बी0. – 08

रेल हैड काम्प्लेक्स, जम्मू – 180012